॥ ४ - भुवनेश्वरी महाविद्या स्तोत्र एवं कवचम् ॥

अनुक्रमाणिका

माँ भुवनेश्वरी

भुवनेश्वरी यन्त्र

॥ देवी भुवनेश्वरी ॥

देवी भुवनेश्वरी दसमहाविद्या में चौथी महाविद्या हैं। देवीभागवत के अनुसार सृष्टिक्रम में महालक्ष्मी स्वरूपा-आदिशक्ति भगवती भुवनेश्वरी भगवान् शिव के समस्त लीला-विलास की सहचरी हैं। माता भुवनेश्वरी सृष्टि के ऐश्वयर की स्वामिनी हैं। चेतनात्मक अनुभूति का आनंद इन्हीं में हैं। गायत्री उपासना में भुवनेश्वरी जी का भाव निहित है।

अंकुश और पाश इनके मुख्य आयुध हैं। अंकुश नियन्त्रण का प्रतीक है और पाश राग अथवा आसक्ति का प्रतीक है। इस प्रकार सर्वरूपा मूल प्रकृति ही भुवनेश्वरी हैं, जो विश्व को वमन करने के कारण वामा, शिवमयी होने से ज्येष्ठा तथा कर्म-नियन्त्रण, फलदान और जीवों को दण्डित करने के कारण रौद्री कही जाती हैं। भगवान् शिव का वाम भाग ही भुवनेश्वरी कहलाता है। भुवनेश्वरी के संग से ही भुवनेश्वर सदाशिव को सर्वेश होने की योग्यता प्राप्त होती है।

भुवनेश्वरी माता के एक मुख, चार हाथ हैं चार हाथों में गदा-शक्ति का एवं दंड-व्यवस्था का प्रतीक है। इनका वर्ण श्याम तथा गौर वर्ण हैं। इनके नख में ब्रह्माण्ड का दर्शन होता है। माता भुवनेश्वरी सूर्य के समान लाल वर्ण युक्त दिव्य प्रकाश से युक्त हैं। उनके मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है। तीन नेत्रों से युक्त देवी के मुख पर मुस्कान की छटा छायी रहती है। उनके हाथों में पाश, अङ्कुश, वरद एवं अभय मुद्रा शोभा पाते हैं।

महानिर्वाण तन्त्र के अनुसार सम्पूर्ण महाविद्याएँ भगवती भुवनेश्वरी की सेवा में सदा संलग्न रहती हैं। सात करोड़ महामन्त्र इनकी सदा आराधना करते हैं। इनके बीज मंत्र को समस्त देवी देवताओं की आराधना में विशेष शक्ति दायक माना जाता हैं इनके मूल मंत्र और पंचाक्षरी मंत्र का जाप करने से समस्त सुखों एवं सिद्धियों की प्राप्ति होती है।

देवी भागवत के अनुसार दुर्गम नामक दैत्य के अत्याचार से संतप्त होकर देवताओं और ब्राह्मणों ने हिमालय पर सर्वकारणस्वरूपा भगवती भुवनेश्वरी की ही आराधना की थी। उनकी आराधना से प्रसन्न होकर भगवती भुवनेश्वरी तत्काल प्रकट हो गयीं। वे अपने हाथों में बाण, कमल-पुष्प तथा शाक-मूल लिये हुए थीं। उन्होंने अपने नेत्रों से अश्रुजल की सहस्रों धाराएँ प्रकट की। इस जल से भूमण्डल के सभी प्राणी तृप्त हो गये। समुद्रों तथा सरिताओं में अगाध जल भर गया और समस्त औषधियाँ सिंच गयीं। अपने हाथ में लिये गये शाकों और फल-मूल से प्राणियों का पोषण करने के कारण भगवती भुवनेश्वरी ही **'शताक्षी'** तथा **'शाकम्भरी'** नामसे विख्यात हुईं।

इन्हों ने ही दुर्गमासुर को युद्धमें मारकर उसके द्वारा अपहृत वेदों को देवताओं को पुनः सौपा था। उसके बाद भगवती भुवनेश्वरी का एक नाम **दुर्गा** प्रसिद्ध हुआ।

पुत्र प्राप्ती के लिए लोग इनकी आराधना करते हैं। भक्तों को अभय एवं सिद्धियां प्रदान करना इनका स्वभाविक गुण है। इस महाविद्या की आराधना से सूर्य के समान तेज और ऊर्जा प्रकट होने लगती है। ऐसा व्यक्ति अच्छे राजनीतिक पद पर आसीन हो सकता है। माता का आशीर्वाद मिलने से धनप्राप्त होता है और संसार के सभी शक्ति स्वरूप महाबली उसका चरणस्पर्श करते हैं। रुद्रयामल में इनका कवच, नीलसरस्वतीतन्त्र में इनका हृदय तथा महातन्त्रार्णव में इनका सहस्रनाम संकलित है।

- मुख्य नाम **भुवनेश्वरी।**
- अन्य नाम **सर्वेश्वरी या सर्वेशी, सर्वरुपा, विश्वरुपा, जगत-धात्रि, शताक्षी, शाकम्भरी।**
- भैरव **त्र्यम्बक।**
- विष्णु के अवतारों से सम्बद्ध **भगवान वराह।**
- कुल **काली कुल।**
- दिशा **पश्चिम।**
- स्वभाव **सौम्य, राजसी गुण सम्पन्न।**
- तीर्थ स्थान या मंदिर नैनातिवु (मनीपल्लवं) शक्तिपीठ है (श्रीलंका के उत्तरी भाग में), गुजरात के गोंडल एवं गुंजा, उड़ीसा में समलेश्वरी तथा कटक चंडी मंदिर, कामाख्या मंदिर के अंदर भुवनेश्वरी, हिमाचल प्रदेश के कुल्लू,
- कार्य **सम्पूर्ण जगत का निर्माण तथा संचालन।**
- शारीरिक वर्ण **सहस्त्रों उदित सूर्य के प्रकाश के समान कान्तिमयी।**
- विशेषता **सिद्धविद्या, भोगदात्री**

॥ भुवनेश्वरी माता मंत्र ॥

- भुवनेश्वरी माता का मंत्र स्फटिक की माला से ग्यारह माला प्रतिदिन जाप कर सकते हैं।
- नोट : भुवनेश्वरी महाविद्या साधना विधि आप बिना गुरु बनाये ना करें गुरु बनाकर व अपने गुरु से सलाह लेकर इस साधना को करना चाहिए। क्युकी बिना गुरु के की हुई साधना आपके जीवन में हानि ला सकती है।

- मंत्र **ह्रीं।**
- मंत्र **ऐ ह्रीं।**
- मंत्र **ऐं ह्रीं ऐं।**
- बीज मंत्र **ऐं ह्रीं ॐ और ह्रीम।**
- मूल मंत्र **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमः।**
- एक बीजाक्षर मंत्र **ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः।** मंगलवार को दक्षिणाभिमुख होकर जप शुरु करें।
- द्वय बीजाक्षर मंत्र **श्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः।** मंगलवार को दक्षिणाभिमुख होकर जप शुरु करें।
- त्रय बीजाक्षर मंत्र ॐ श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः। मंगलवार को दक्षिणाभिमुख होकर जप शुरु करें।
- त्रयक्षरी मंत्र **हं ॐ क्रीं।**
- चतुरक्षर बीज मंत्र **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनश्वर्ये नमः।** और **ह्रीं भुवनेश्वरीयै ह्रीं नमः।**
  - चतुर्थी तिथि बुधवार को नैऋत्यभिमुख होकर जप करें।
- पंचाक्षरी मंत्र **ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः।** और **ऐं हं श्रीं ऐं हं।**
  - पंचमी तिथि गुरुवार को पश्चिमाभिमुख होकर जप करें।
- षडाक्षर बीज मंत्र **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः भुवनेश्वर्यै नमः।**
  - षष्ठी तिथि शुक्रवार को वायव्याभिमुख होकर जप करें।
- सप्ताक्षर बीज मंत्र **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः।**
  - अष्टमी तिथि रविवार को ईशान दिशा में मुंह करके जप करें।
- महा मंत्र **ॐ श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं क्लीं सौः क्लीं सौः क्रीं क्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः।**
- दारिद्र्य नाशय मंत्र ॐ ह्रीं भुवनेश्वरी इहागच्छ इहतिष्ठ इहस्थापय मम सकल दरिद्रय नाशय नाशय ह्रीं ॐ।
  - **हूं हूं ह्रीं ह्रीं दारिद्रय नाशिनी भुवनेश्वरी ह्रीं ह्रीं हूं हूं फट।**

॥ भुवनेश्वरी ध्यान एवं स्तुति ॥

- **भुवनेश्वरी स्तुति** उद्यद्हर्द्युतिमिन्दु किरीटां तुंगकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
  स्मेरमुखीं वरदाङ्कुश पाश भीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

- **भुवनेश्वरी ध्यानम्** बालर विद्युति मिन्दु किरीटां तुंगकुचां नयनत्रय युक्ताम् ।
  स्मेरमुखीं वरदाङ्कुश पाशभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

॥ भुवनेश्वरी स्तोत्रम - १ ॥

- अष्टसिद्धिरालक्ष्मी अरुणाबहुरुपिणि ।
  त्रिशूल भुक्कुरादेवी पाशाकुशविदारिणी ॥ ॥ १ ॥
- खड्गखेटधरादेवी घण्टनि चक्रधारिणी ।
  षोडशी त्रिपुरादेवी त्रिरेखा परमेश्वरी ॥ ॥ २ ॥
- कौमारी पिंगलाचैव वारीनी जगामोहिनी ।
  दुर्गदेवी त्रिगंधाच नमस्ते शिवनायक ॥ ॥ ३ ॥
- एवंचाष्टशतनामंच श्लाके त्रिनयभावितं
  भक्तये पठेन्नित्यं दारिद्रयं नास्ति निश्चितं ॥ ॥ ४ ॥
- एकः काले पठेन्नित्यं धनधान्य समाकुलं
  द्विकालेयः पठेन्नित्यं सर्व शत्रुविनाशानं ॥ ॥ ५ ॥
- त्रिकालेयः पठेन्नित्यं सर्व रोग हरम परं
  चतु:काले पठेन्नित्यं प्रसन्नं भुवनेश्वरी ॥ ॥ ६ ॥

॥ इति श्री रुद्रयावले ईश्वरपार्वति संवादे श्री भुवनेश्वरी स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

॥ भुवनेश्वरी स्तोत्रम् - २ ॥

भुवनेश्वरी को आदिशक्ति और मूल प्रकृति भी कहा गया है। भुवनेश्वरी ही शताक्षी और शाकम्भरी नाम से प्रसिद्ध हुई। पुत्र प्राप्ती के लिए लोग इनकी आराधना करते हैं। भक्तों को अभय एवं सिद्धियां प्रदान करना इनका स्वभाविक गुण है। इस महाविद्या की आराधना से सूर्य के समान तेज और ऊर्जा प्रकट होने लगती है। ऐसा व्यक्ति अच्छे राजनीतिक पद पर आसीन हो सकता है।

- **अथानन्दमयीं साक्षाच्छब्दब्रह्मस्वरूपिणीम्।**
  ईडे सकलसम्पत्त्यै जगत्कारणमम्बिकाम्॥
- **विद्यामशेषजननीमरविन्दयोने-**
  र्विष्णोः शिवस्य च वपुः प्रतिपादयित्रीम्।
  सृष्टिस्थितिक्षयकरीं जगतां त्रयाणां
  स्तुत्वा गिरं विमलयाम्यहमम्बिके त्वाम्॥ ॥ १ ॥
- **पृथ्व्या जलेन शिखिना मरुताम्बरेण**
  होत्रेन्दुना दिनकरेण च मूर्तिभाजः।
  देवस्य मन्मथरिपोरपि शक्तिमत्ता
  हेतुस्त्वमेव खलु पर्वतराजपुत्रि॥ ॥ २ ॥
- **त्रिस्रोतसः सकलदेवसमर्च्चितायाः**
  वैशिष्ट्यकारणमवैमि तदेव मातः।
  त्वत्पादपङ्कजपरागपवित्रितासु
  शम्भोर्जटासु सततं परिवर्तनं यत्॥ ॥ ३ ॥
- **आनन्दयेत्कुमुदिनीमधिपः कलाना-**
  न्नान्यामिनः कमलिनीमथ नेतरां वा।
  एकस्य मोदनविधौ परमेकमीष्टे
  त्वं तु प्रपञ्चमभिनन्दयसि स्वदृष्ट्या॥ ॥ ४ ॥
- **आद्याप्यशेषजगतान्नवयौवनासि**
  शैलाधिराजतनयाप्यतिकोमलासि।
  त्रय्याः प्रसूरपि तया न समीक्षितासि
  ध्येयासि गौरि मनसो न पथि स्थितासि॥ ॥ ५ ॥
- **आसाद्य जन्म मनुजेषु चिराद्दुरापं**
  तत्रापि पाटवमवाप्य निजेन्द्रियाणाम्।
  नाभ्यर्चयन्ति जगतां जनयित्रि ये त्वां
  निःश्रेणिकाग्रमधिरुह्य पुनः पतन्ति॥ ॥ ६ ॥

- कर्पूरचूर्णहिमवारिविलोडितेन
  ये चन्दनेन कुसुमैश्च सुजातगन्धैः ।
  आराधयन्ति हि भवानि समुत्सुकास्त्वां
  ते खल्वखण्डभुवनाधिभुवः प्रथन्ते ॥ ॥ ७ ॥
- आविश्य मध्यपदवीं प्रथमे सरोजे
  सुप्ता हि राजसदृशी विरचय्य विश्वम् ।
  विद्युल्लतावलयविभ्रममुद्वहन्ती
  पद्मानि पञ्च विदलय्य समश्नुवाना ॥ ॥ ८ ॥
- तन्निर्गतामृतरसैरभिषिच्य गात्रं
  मार्गेण तेन विलयं पुनरप्यवाप्ता ।
  येषां हृदि स्फुरसि जातु न ते भवेयु-
  र्मातर्महेश्वरकुटुम्बिनि गर्भभाजः ॥ ॥ ९ ॥
- आलम्बिकुण्डलभरामभिरामवक्त्रा-
  मापीवरस्तनतटीं तनुवृत्तमध्याम् ।
  चिन्ताक्षसूत्रकलशालिखिताढ्यहस्ता-
  मावर्तयामि मनसा तव गौरि मूर्तिम् ॥ ॥१०॥
- आस्थाय योगमविजित्य च वैरिषट्क-
  माबध्य चेन्द्रियगणं मनसि प्रसन्ने ।
  पाशाङ्कुशाभयवराढ्यकरांशुवक्त्रा-
  मालोकयन्ति भुवनेश्वरि योगिनस्त्वाम् ॥ ॥११॥
- उत्तप्तहाटकनिभां करिभिश्चतुर्भि-
  रावर्तितामृतघटैरभिषिच्यमाना ।
  हस्तद्वयेन नलिने रुचिरे वहन्ती
  पद्मापि साभयकरा भवसि त्वमेव ॥ ॥१२॥
- अष्टाभिरुग्रविविधायुधवाहिनीभि-
  र्दोर्वल्लरीभिरधिरुह्य मृगाधिवासम् ।
  दूर्वादलद्युतिरमर्त्यविपक्षपक्षा-
  न्न्यक्कुर्वती त्वमसि देवि भवानि दुर्गे ॥ ॥१३॥
- आविर्न्निदाघजलशीकरशोभिवक्त्रां
  गुञ्जाफलेन परिकल्पितहारयष्टिम् ।
  रत्नांशुकामसितकान्तिमलङ्कृतां त्वा-
  माद्यां पुलिन्दतरुणीमसकृन्नमामि ॥ ॥१४॥

- हंसैर्गतिः क्वणितनूपुरदूरदृष्टे
मूर्तेरिवाप्तवचनैरनुगम्यमानौ ।
पद्मविवोर्द्ध्वमुखरूढसुजातनालौ
श्रीकण्ठपत्नि शिरसैव दधे तवाङ्घ्री ॥ ॥१५॥
- द्वाभ्यां समीक्षितुमतृप्तिमतेव दृग्भ्या-
मुत्पाद्यता त्रिनयनं वृषकेतनेन ।
सान्द्रानुरागभवनेन निरीक्ष्यमाणे
जङ्घे उभे अपि भवानि तवानतोऽस्मि ॥ ॥१६॥
- ऊरू स्मरामि जितहस्तिकरावलेपौ
स्थौल्येन मार्द्दवतया परिभूतरम्भौ ।
श्रोणीभरस्य सहनौ परिकल्प्य दत्तौ
स्तम्भाविवाङ्गवयसा तव मध्यमेन ॥ ॥१७॥
- श्रोण्यौ स्तनौ च युगपत्प्रथयिष्यतोच्चै-
र्बाल्यात्परेण वयसा परिकृष्णसारः ।
रोमावलीविलसितेन विभाव्यमूर्ति-
र्मध्यं तव स्फुरतु मे हृदयस्य मध्ये ॥ ॥१८॥
- सख्यास्स्मरस्य हरनेत्रहुताशभीरो-
र्ल्लावण्यवारिभरितं नवयौवनेन ।
आपाद्य दत्तमिव पल्लवमप्रविष्टं
नाभिं कदापि तव देवि न विस्मरेयम् ॥ ॥१९॥
- ईशोऽपि गेहपिशुनं भसितं दधाने
काश्मीरकर्द्दममनु स्तनपङ्कजे ते ।
स्नानोत्थितस्य करिणः क्षणलक्षफेनौ
सिन्दूरितौ स्मरयतः समदस्य कुम्भौ ॥ ॥२०॥
- कण्ठातिरिक्तगलदुज्ज्वलकान्तिधारा
शोभौ भुजौ निजरिपोर्मकरध्वजेन ।
कण्ठग्रहाय रचितौ किल दीर्घपाशौ
मातर्मम स्मृतिपथं न विलज्जयेताम् ॥ ॥२१॥
- नात्यायतं रुचिरकम्बुविलासचौर्यं
भूषाभरेण विविधेन विराजमानम् ।
कण्ठं मनोहरगुणं गिरिराजकन्ये
सञ्चिन्त्य तृप्तिमुपयामि कदापि नाहम् ॥ ॥२२॥

- **अत्यायताक्षमभिजातललाटपट्टं**
  मन्दस्मितेन दरफुल्लकपोलरेखम् ।
  बिम्बाधरं खलु समुन्नतदीर्घनासं
  यत्ते स्मरत्यसकृदम्ब स एव जातः ॥ ॥२३॥
- **आविस्त्वयारकरलेखमनल्पगन्ध-**
  पुष्पोपरि भ्रमदलिव्रजनिर्विशेषम् ।
  यश्चेतसा कलयते तव केशपाशं
  तस्य स्वयं गलति देवि पुराणपाशः ॥ ॥२४॥
- **श्रुतिसुरचितपाकं धीमतां स्तोत्रमेतत्**
  पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा ।
  स भवति पदमुच्चैस्सम्पदां पादनम्र-
  क्षितिपमुकुटलक्ष्मील्लक्षणानां चिराय ॥ ॥२५॥

॥ इति श्री भुवनेश्वरी स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

॥ भुवनेश्वरी कवचम् ॥

- **शिव उवाच** **पातकं दहनं नाम कवचं सर्व्वकामकम् ।**
श्रृणु पार्व्वति वक्ष्यामि तव स्नेहात्प्रकाशितम् ॥ ॥ १ ॥
  - श्री शिव जी बोले हे पार्वती पातक दहन नामक भुवनेश्वरी का कवच कहता हूँ। सुनो। इसके द्वारा सब कामना पूर्ण होती है। तुम्हारे स्नेह के कारण इसको व्यक्त करता हूं।

  - **पातकं दहनस्यास्य सदाशिव ऋषिः स्मृतः ।**
छन्दोअनुष्टुप देवता च भुवनेश्वरी प्रकीर्त्तिता ।
धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्त्तितः ॥ ॥ २ ॥
  - इस कवच के ऋषि सदाशिव, छन्द अनुष्टुप, देवता भुवनेश्वरी और धर्मार्थ, काम एवं मोक्ष के निमित्त इसका विनियोग है।

  - **ऐं बीजं मे शिरः पातु ह्रीं बीजं वदनं मम् ।**
श्रीं बीजं कटिदेशन्तु सर्वांग भुवनेश्वरी ।
दिक्षु चैव विदिक्ष्वीयं भुवनेश्वरी सदावतु ॥ ॥ ३ ॥
  - ऐं मेरे मस्तक की, ह्रीं मेरे मुख की, श्रीं मेरे कमर की और भुवनेश्वरी मेरे सर्वांग की रक्षा करें। क्या दिशा, क्या विदिशा सर्वत्र भुवनेश्वरी ही मेरी रक्षा करें।

  - **अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेराअपि धनेश्वरः ।**
तस्मात्सदा प्रयत्नेन पठेयुर्म्मानवा भुवि ॥ ॥ ४ ॥
  - इस कवच को पढ़ने के प्रसाद से कुबेर जी धनाधिपति हैं। अतएव साधकों को इसका सदा पाठ करना चाहिए।

॥ इति श्री भुवनेश्वरी कवचम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री भुवनेश्वरी त्रैलोक्य मोहन कवचम् ॥

- **देव्युवाच** भगवन्, परमेशान, सर्वागमविशारद ।
कवचं भुवनेश्वर्याः कथयस्व महेश्वर! ॥
- **भैरव उवाच** शृणु देवि, महेशानि! कवचं सर्वकामदं ।
त्रैलोक्यमोहनं नाम सर्वेप्सितफलप्रदम् ॥
- **विनियोग** ॐ अस्य श्रीत्रैलोक्यमोहनकवचस्य श्रीसदाशिव ऋषिः । विराट् छन्दः । श्री भुवनेश्वरी देवता । चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थं कवचपाठे विनियोगः ।
- **ऋष्यादिन्यास** श्री सदा शिव ऋषये नमः शिरसि । विराट्छन्दसे नमः मुखे । श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि । चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थं कवचपाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।
- **षडंग न्यासः**

	करन्यास	हृदयादि न्यास
ॐ ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः ।
ॐ ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः ।	शिरसे स्वाहा ।
ॐ ह्रुं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट् ।
ॐ ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम् ।
ॐ ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ ह्रः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट् ।

- **कवचस्तोत्रम्** ॐ ह्रीं क्लीं मे शिरः पातु श्रीं फट् पातु ललाटकम् ।
सिद्धपञ्चाक्षरी पायान्नेत्रे मे भुवनेश्वरी ॥ ॥ १ ॥
- श्रीं क्लीं ह्रीं मे श्रुतीः पातु नमः पातु च नासिकाम् ।
देवी षडक्षरी पातु वदनं मुण्डभूषणा ॥ ॥ २ ॥
- ॐ ह्रीं श्रीं ऐं गलं पातु जिह्वां पायान्महेश्वरी ।
ऐं स्कन्धौ पातु मे देवी महात्रिभुवनेश्वरी ॥ ॥ ३ ॥
- ह्रूं घण्टां मे सदा पातु देव्येकाक्षररूपिणी ।
ऐं ह्रीं श्रीं हूं तु फट् पायादीश्वरी मे भुजद्वयम् ॥ ॥ ४ ॥
- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं फट् पायाद् भुवनेशी स्तनद्वयम् ।
ह्रां ह्रीं ऐं फट् महामाया देवी च हृदयं मम ॥ ॥ ५ ॥

- ऐं ह्रीं श्रीं हूं तु फट् पायात् पार्श्वौ कामस्वरूपिणी।
  ॐ ह्रीं क्लीं ऐं नमः पायात् कुक्षिं महाषडक्षरी॥ ॥ ६ ॥
- ऐं सौः ऐं ऐं क्लीं फट् स्वाहा कटिदेशे सदाऽवतु।
  अष्टाक्षरी महाविद्या देवेशी भुवनेश्वरी॥ ॥ ७ ॥
- ॐ ह्रीं ह्रौं ऐं श्रीं ह्रीं फट् पायान्मे गुह्यस्थलं सदा।
  षडक्षरी महाविद्या साक्षाद् ब्रह्मस्वरूपिणी॥ ॥ ८ ॥
- ऐं ह्रां ह्रौं ह्रूं नमो देव्यै देवि! सर्वं पदं ततः,
  दुस्तरं पदं तारय तारय प्रणवद्वयम्।
  स्वाहा इति महाविद्या जानुनि मे सदाऽवतु॥ ॥ ९ ॥
- ऐं सौः ॐ ऐं क्लीं फट् स्वाहा जङ्घेऽव्याद् भुवनेश्वरी।
  ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं फट् पायात् पादौ मे भुवनेश्वरी॥ ॥१०॥
- ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं सौः सौः वद वद।
  वाग्वादिनीति च देवि विद्या या विश्वव्यापिनी॥ ॥११॥
- सौ:सौ:सौः ऐंऐंऐं क्लीङ्क्लीङ्क्लीं श्रींश्रींश्रीं ह्रींह्रींह्रीं ॐ।
  ॐ ॐ चतुर्दशात्मिका विद्या पायात् बाहू तु मे॥ ॥१२॥
- सकलं सर्वभीतिभ्यः शरीरं भुवनेश्वरी।
  ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्रदिग्भागे पायान्मे चापराजिता॥ ॥१३॥
- स्त्रीं ऐं ह्रीं विजया पायादिन्दुमदग्निदिक्स्थले।
  ॐ श्रीं सौः क्लीं जया पातु याम्यां मां कवचान्वितम्॥ ॥१४॥
- ह्रीं ह्रीं ऐं सौः हसौः पायान्नैऋतिर्मां तु परात्मिका।
  ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं सदा पायात् पश्चिमे ब्रह्मरूपिणी॥ ॥१५॥
- ॐ ह्रां सौः मां भयाद् रक्षेद् वायव्यां मन्त्ररूपिणी।
  ऐं क्लीं श्रीं सौः सदाऽव्यान्मां कौवेर्यां नगनन्दिनी॥ ॥१६॥
- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महादेवी ऐशान्यां पातु नित्यशः।
  ॐ ह्रीं मन्त्रमयी विद्या पायादूर्ध्वं सुरेश्वरी॥ ॥१७॥
- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मां पायादधस्था भुवनेश्वरी।
  एवं दशदिशो रक्षेत् सर्वमन्त्रमयो शिवा॥ ॥१८॥

- प्रभाते पातु चामुण्डा श्रीं क्लीं ऐं सौः स्वरूपिणी ।
  मध्याह्नेऽव्यान्मामम्बा श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः स्वरूपिणी ॥ ॥१९॥

- सायं पायादुमादेवी ऐं ह्रीं क्लीं सौः स्वरूपिणी ।
  निशादौ पातु रुद्राणी ॐ क्लीं क्रीं सौः स्वरूपिणी ॥ ॥२०॥

- निशीथे पातु ब्रह्माणी क्रीं हूं ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी ।
  निशान्ते वैष्णवी पायादोमै ह्रीं क्लीं स्वरूपिणी ॥ ॥२१॥

- सर्वकाले च मां पायादो ह्रीं श्रीं भुवनेश्वरी ।
  एषा विद्या मया गुप्ता तन्त्रेभ्यश्चापि साम्प्रतम् ॥ ॥२२॥

- **फलश्रुति**

  देवेशि! कथितां तुभ्यं कवचेच्छा त्वयि प्रिये ।
  इति ते कथितं देवि! गुह्यन्तर परं ।
  त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं मन्त्रविग्रहम् ।
  ब्रह्मविद्यामयं चैव केवलं ब्रह्मरूपिणम् ॥ ॥ १ ॥

- मन्त्रविद्यामयं चैव कवचं बन्मुखोदितम् ।
  गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं धारयेद्यदि ।
  साधको वै यथाध्यानं तत्क्षणाद् भैरवो भवेत् ।
  सर्वपापविनिर्मुक्तः कुलकोटि समुद्धरेत् ॥ ॥ २ ॥

- गुरुः स्यात् सर्वविद्यासु ह्यधिकारो जपादिषु ।
  शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृता ।
  शतमष्टोत्तरं जप्त्वा तावद्धोमादिकं तथा ।
  त्रैलोक्ये विचरेद्वीरो गणनाथो यथा स्वयम् ॥ ॥ ३ ॥

- गद्यपद्यमयी वाणी भवेद् गङ्गाप्रवाहवत् ।
  पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव पठेत् सकृत् ॥ ॥ ४ ॥

॥ इति श्री भुवनेश्वरी त्रैलोक्य मोहन कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री भुवनेश्वरी अष्टकम ॥

- भुवनेश्वरीं नमस्यामो भक्तकल्पद्रुमां सदा ।
  वरदां कामदां शान्तां कृष्णातीरनिवासिनीम् ॥ ॥ १ ॥

- सर्वसिद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदे शुभे ।
  भुवनेश्वरी महाकालि मनोभीष्ट प्रदायिनी ॥ ॥ २ ॥

- सर्वाभयप्रदे देवि सर्वदुष्टविनाशिनि ।
  भुवनेश्वरी महाकालि मनोभीष्ट प्रदायिनी॥ ॥ ३ ॥

- सर्व क्लेशहरे देवि (श्री)महाविष्णुस्वरूपिणी ।
  भुवनेश्वरी महाकालि मनोभीष्ट प्रदायिनी ॥ ॥ ४ ॥

- अन्तर्यामिस्वरूपेण स्थिते सर्वत्र सर्वगे ।
  भुवनेश्वरी महाकालि मनोभीष्ट प्रदायिनी ॥ ॥ ५ ॥

- भवनाश करे देवि भवभेषजदायिनी ।
  भुवनेश्वरी महाकालि मनोभीष्ट प्रदायिनी ॥ ॥ ६ ॥

- अविद्यापटलध्वंसि महानन्देऽभयप्रदे ।
  भुवनेश्वरी महाकालि मनोभीष्ट प्रदायिनी ॥ ॥ ७ ॥

- संसारतरणोपाये निर्जरैरूपसेविते ।
  भुवनेश्वरी महाकालि मनोभीष्ट प्रदायिनी ॥ ॥ ८ ॥

- जय जय अम्बिके सिद्धप्रदे । अभिष्टदायिनी मुक्तिप्रदे ।
  अभयप्रदे भक्तकामदे । महानन्दे भवानी ।
  सर्वव्यापके विष्णुरूपिणी । महाकाली दुःखहारिणी ।
  अज्ञानपटलध्वंसकारिणी । देवी मृडानी सर्वगे ॥